कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (4) खण्ड -(7)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- मैजारिटी में कौन से शक्ति की कमी रह जाती है?

A- परखने की शक्ति की

B- निर्णय शक्ति की

C- परिवर्तन शक्ति की

D-सहनशक्ति

प्रश्न स़ 2- शान्ति कोई जंगल में नहीं मिलती, लेकिन आत्मा का क्या ही शान्ति है ?

A-निजी गुण

B-स्वरुप

C-स्वधर्म

D-A , B और C

E- A और C-

प्रश्न सं 3- 1- तुम कौन हो, तुम्हें भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, दुःखधाम को सुखधाम बनाना है ?

A -रूहानी सोशल वर्कर

B -खुदाई खिदमतगार

C -रूहानी मिलिट्री

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न सं 4-किस का अर्थ है नम्बरवन पास विद् ऑनर होना?

A- लक्ष्मीनारायण

B- विजयमाला में आने वाले

C- ब्रह्मा और सरस्वती

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 5- अभी तुम्हारा दोनों ताज नहीं रहा है - न लाइट का, न राजाई का, किसको ही लाइट का ताज देते हैं?

A- पवित्र

B- ब्राह्मण

C- निर्विकारी

D- देवता

प्रश्न सं 6- तुमको तो अपने बाप को निरन्तर याद करना है। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है, यह बड़ी क्या है ?

A- युनिवर्सिटी

B- विद्यालय

C-अस्पताल कम युनिवर्सिटी

D-A, B और C

E- A और C

प्रश्न सं 7- शिव बाबा के बार में कौन सा कथन सत्य नहीं है ?

A- सचखण्ड का मालिक

B- प्रकट है

C- विश्व का मालिक

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8- बाप क्या वर्सा देते हैं-

A-घर का,

B-पढ़ाई का

C-स्वर्ग की बादशाही का

D-उपरोक्त सभी का

पार्ट 4 खण्ड 7 के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-C परिवर्तन शक्ति की।

अव्यक्त बापदादा- मैजारिटी अर्थात् बहुसंख्यक में परिवर्तन शक्ति की कमी है।मेजोरिटी अथक बनते हो लेकिन कभी ... स्वपरिवर्तन से दूसरे का परिवर्तन कर सकते हो।नहीं तो अब तक अनेक अल्पज्ञ अयथार्थ मान्यताओं द्वारा मेजोरिटी आत्मायें विश्व परिवर्तन वा स्वयं का परिवर्तन अति मुश्किल नहीं होता...अष्ट शक्तियों परखने, निर्णय, सहनशक्ति आदि एवं ज्ञान ,पवित्रता और शान्ति आदि शक्ति होने पर ही परिवर्तन शक्ति काम करती है।अष्ट शक्तियों में सहनशक्ति को सबसे बड़ा सिद्ध किया जाता है। परन्तु इन अनेक शक्तियों का प्रयोग कर ही हम *स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के निमित्त बन सकते है।*

उत्तर सं 2- D स्वधर्म,निजी गुण, स्वरूप।

आत्मा शरीर से अलग है तो शांत है। शरीर के अंदर है, तो देहभान में है,अशांत है।आत्मा का स्वधर्म तो शान्ति है। वह अपने स्वधर्म को भी नहीं जानते हैं। आत्मा के सात गुणों में में शांति भी

निजी गुण है। ओम् शान्ति... शान्ति मेरा स्वधर्म, निजी गुण, अनादि संस्कार, गले का हार है... मेरी शक्ति है।शांत स्वरुप आत्मा हूँ' व 'मेरा स्व-धर्म शांति है'।इस तरह आत्मा का स्वधर्म शांति ही नहीं, निजी गुण और स्वरुप भी है। बाबा कहते हैं -देह-अभिमान वाले ही यह शब्द बोलते हैं क्योंकि उन्हें आत्मा का ज्ञान ही नहीं है। *तुम जानते हो आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है।*

उत्तर 3 - E जिसके A, B और C उतर सही।

भारत को स्वर्ग अर्थात् दुःखधाम से सुखधाम बनाने वालों के सम्बन्ध में अनेक वर्णन महावक्यों में है,यथा-

1-तुम रूहानी सोशल वर्कर हो, तुम्हें भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, ...तुम बच्चों को रूहानी सोशल वर्कर कहा जाता है। सोशल वर्कर भारत में बहुत हैं, उन्हों को भी ...

2-सच्चा खुदाई खिदमतगार बन भारत को स्वर्ग बनाने में बाप को पवित्रता की मदद करनी है।परन्तु आप सब तो हैं ही 'खुदाई खिदमतगार'। सिर्फ भगवान का नाम लेने वाले नहीं लेकिन भगवान के साथी बन श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं।

3- इस संगम के ईश्वरीय संसार में बाबा हम रूहानी मिलिट्री को कहते... ... स्वर्ग का मालिक बन।तुम मनुष्य को स्वर्ग का मालिक बना सकते हो। तुम रूहानी सेना हो।

4- सच्चे रूहानी सैलवेशन आर्मी बन भारत को विकारों से सैलवेज करना है।

उपरोक्त महावाक्यों से सिद्ध है कि बाबा ज्ञान सेवा आदि में आगे करने के लिए *विभिन्न उपाधि/टाइटल से सुशोभित/ अलंकृत कर चमत्कृत करता रहता है।*

उत्तर 4- A लक्ष्मीनारायण

पास विद् ऑनर अर्थात् जो सम्मान सहित उत्तीर्ण होंगें । जिनको कोई सज़ा के बिना परमधाम जाना हैं।पास विद ऑनर बिना धर्मराज की सजाओं के अनुभव से पास होंगे। विजयमाला में 8,108, 16108 की माला होगी। जिसमें 8 अष्टरतन सर्वश्रेष्ठ होंगें। अष्टरतन में प्रथम दो ब्रह्मा बाबा और मम्मा का उल्लेख बाबा ने मुरलियों में किया है। यही दोनों सम्पूर्ण होकर अन्त में परमधाम वाया सुखधाम आते हैं, तो *नम्बरवन पास विद् आनर् लक्ष्मीनारायण होते हैं।*

उत्तर सं 5- A- पवित्र

देवता थे तब लाइट का ताज और रतन जड़ित ताज दोनों थे। ... डबल ताज वालों को पूजते है। अव्यक्त महाकाव्य -डबल ताजधारी (पवित्रता का ताज और रतन-जड़ित ताज)... हर चीज़ नई।डबल सिरताज देवता बनते हैं। बरोबर तुम बन रहे हो। देवताओं को दोनों ताज रहते हैं।संगमयुग का डबल ताज एक है स्नेह का दूसरा है सर्विस का।

उत्तर सं 6-E A, और C दोनों

जगदीश भ्राता के सत्प्रयासों से ओम् मंडली का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाम पड़ा। यह संस्था अपने यथा नाम यूनिवर्सिटी को आज चरितार्थ कर रही। यूनिवर्सिटी यें कुछ दर्जन महा विद्यालय जुड़े होते हैं। पर इस संस्था के जिसका मुख्यालय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय माउण्ट आबू है उससे हज़ारों मुख्य सेवा केन्द्र पूरे विश्व में व गीता पाठशालायें विद्यालय के रूप में जुड़ीं हुई हैं। जिसमें बहुत से ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी नियमित क्लास लेते हैं। मुरली से -शिवबाबा की श्रीमत ... सफल कर सफलता पाओ .. तुम यह

रूहानी हॉस्पिटल कम यूनिवर्सिटी खोलते जाओ ...।अगर शिवबाबा न आये तो सब वर्थ नाट ए पेनी हों। ... *यह एक हॉस्पिटल-कम-यूनिवर्सिटी है।*

उत्तर 7-D शिव बाबा के सम्बन्ध में उपरोक्त सभी कथन असत्य हैं।

सचखण्ड बाबा स्थापन करते हैं।बाबा सच सुनाकर हम बच्चों को सचखण्ड का मालिक बनाते हैं। बाबा कहते हैं तुमको सचखंड का मालिक बनाता हूँ, मैं नहीं बनता हूँ। स्वर्ग में तुम मुझे याद नहीं करते हो।बाबा है गुप्त, ज्ञान का सागर। इस दुःखमय संसार (नर्क) को सुखमय संसार (स्वर्ग) में परिवर्तन करने का महान कार्य गुप्त रूप में करा रहे हैं। यद्यपि *ज्ञान सूर्य प्रकटा अज्ञान अंधेर विनाश* अर्थात् शिव बाबा जन्म नहीं लेते, वह तन का आधार लेते हैं। वह रचयिता है जिसके द्वारा रचना की नॉलेज मिलती है। पर वह प्रत्यक्ष न होने के कारण गुप्त रूप से इस महान कार्य को कराते हैं। गुप्त का विलोम प्रकट है। शिव बाबा का गुप्त भाग/पार्ट 1936 के आसपास शुरू हुआ था जिसे आज हम जानते है। बाबा से वर्सा ले तुम्हें विश्व का मालिक बनाता हूँ। इस तरह स्पष्ट है शिव बाबा मालिक नहीं है।

उत्तर सं 8-C स्वर्ग की बादशाही का।

मुरली से- शिवबाबा को थोड़े-ही मकान आदि बनाना है। यह ईश्वरीय पढ़ाई भी सोर्स आफ इनकम है, जिससे बेहद की बादशाही मिलती है। पढ़ाई, पवित्रता,योग, सेवा आदि से हमें बेहद की बादशाही मिलती है।परन्तु यह सब साधन है, कर्तव्य हैं। अधिकार या वर्सा स्वर्ग की बादशाही मिलना है। बिना कर्तव्य अधिकार की आश नहीं करनी चाहिए। शिवबाबा की पढ़ाई जो सोर्स आफ इनकम है उससे स्वर्ग की बादशाही प्राप्त होती है। इसलिए वर्सा घर और पढाई न होकर स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करना है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (4) खण्ड -(8)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- गीता द्वारा ही बाप ने कौन सी नॉलेज दी है?

A-देवी देवता धर्म की

B-मामेकम् याद करो।

C-प्राचीन सहज राजयोग की

D- मामेकम् शरणं व्रज

प्रश्न सं 2- आस्तिक-नास्तिक, जानना, न जानना कब होता है?

A-सतयुग

B- संगम

C- कलयुग

D- द्वापर और कलियुग दोनों में

प्रश्न सं 3- ब्रह्मा बाप ने बाप के श्रीमत पर पहला कदम क्या उठाया?

A- आज्ञाकारी बने

B- सेवाधारी बने

C- योगी तु आत्मा बने

D-ज्ञानी तू आत्मा

प्रश्न सं 4- कौनसे एक अक्षर में इतनी ताकत है जो देह अभिमान और देह भान सदा के लिये समाप्त हो जाता है ?

A-मनमनाभव

B-मध्याजीव भव

C-करनकरावनहार

D-मामेकम्

प्रश्न सं-5--सारी सृष्टि में सबसे साहूकार ते साहूकार कौन हैं-

A-ब्रह्मा बाप

B-स्वर्ग के लक्ष्मी-नारायण

C-शिव बाबा

D-संगमयुगी ब्राह्मण

प्रश्न सं-6- जगदम्बा ने किस गुण के कारण फुल खाता जमा किया है ?

A- अंतर्मुखता

B- गम्भीरता

C- समर्पणता

D- सेवा

प्रश्न सं 7- जब फाइनल रिज़ल्ट होगी, उसमें पहली मार्क्स किसको मिलेगी ?

A- प्रैक्टिकल सेवाधारी स्वरूप

B- प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप

C- ज्ञानी और योगी तू आत्मा

D- सफलतामूर्त आत्मा

प्रश्न सं 8-गति अथवा मुक्ति मिलती है-

A- कलियुग में

B परमधाम (निर्वाणधाम) में

C संगमयुग में

D सभी

पार्ट (4) खण्ड {8} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-C प्राचीन सहज राजयोग की।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में सिखाये जाने वाला राजयोग भारत का सबसे प्राचीन और परमात्मा द्वारा सिखाया जाने वाला योग है। शिवबाबा स्वयं साधारण मनुष्य तन में आ करके 'गीता-ज्ञान' और सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं।सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस सृष्टि का पूर्ण परिवर्तन करा देते हैं। 7 दिवसीय कोर्स को मुख्य रूप से राजयोग कोर्स भी कहा जाता है।इसके अन्तर्गत ही बाबा देवी देवता धर्म का,मामेकम् याद करो, मामेकम् शरणं व्रज का ज्ञान दे रहे हैं।अतएव प्राचीन सहज राजयोग सबसे उपयुक्त विकल्प है।

उत्तर सं-2-"B" संगम।

आस्तिक-नास्तिक, जानना, न जानना संगम पर ही होता है। अब तुम बच्चे जानते हो, हम बाबा द्वारा आस्तिक बने हैं। मात-पिता मिले तो हो गये आस्तिक। सतयुग में तो है ही प्रालब्ध। वहाँ आस्तिक वा नास्तिक का तो सवाल ही नहीं उठता। बच्चे अब जानते हैं - जो कल नास्तिक थे, बाप और बाप की रचना को नहीं जानते थे, वही अब आस्तिक बने हैं। बाप को और अपने 84 जन्मों को जान गये हैं। कल नहीं जानते थे, आज जानते हैं। बाबा के इन महावाक्यों से स्पष्ट है सतयुग में देवता ईश्वर को न जानने के कारण आस्तिक नास्तिक का सवाल नहीं उठता और द्वापर और कलियुग में परमात्मा और अपना सत्य परिचय न जानने के कारण नास्तिक हैं। संगम पर जब बाबा सहज राजयोग ज्ञान की शिक्षा ब्रह्मावत्सों को देते हैं,तभी ब्राह्मण बन नास्तिक से आस्तिक बनते हैं। इसलिए *संगम* उत्तर सही है।

उत्तर सं- 3- "A" आज्ञाकारी बने।

महावाक्यानुसार ब्रह्मा बाबा ने बाप के श्रीमत पर पहला कदम क्या उठाया? पहला कदम आज्ञाकारी बने। जो आज्ञा मिली उसी पर चल पड़े।सदा आज्ञाकारी रहे। हर समय एक बात में - चाहे

स्व पुरुषार्थ में, चाहे यज्ञ-पालना में निमित्त बने। क्योंकि स्व ही ब्रह्मा विशेष आत्मा है जिसका ड्रामा में पार्ट नूंधा हुआ है। एक ही आत्मा – माता भी है, पिता भी है। यज्ञ-पालना के निमित्त होते हुए भी सदा आज्ञाकारी रहे। स्थापना का कार्य विशाल होते हुए भी किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। हर समय 'जी हाज़िर' का प्रत्यक्ष स्वरूप सहज रूप में देखा। वे अथक सेवाधारी, ज्ञानी तू आत्मा,योगी तू आत्मा भी थे। वैसे तो एक अव्यक्त मुरली में पहला कदम सर्वस्व त्यागी है।पर यह विकल्प न होने से दूसरा कदम *आज्ञाकारी* बने सही विकल्प है।

उत्तर सं - 4"C" करनकरावनहार।

बाबा कहते हैं करनकरावनहार अर्थात् करने करानेवाला एक अक्षर में इतनी ताकत है जो देह अभिमान और देह भान सदा के लिये समाप्त हो जाता है।सदा करनकरावनहार बाप की स्मृति में रहकर मैं पन, देह का भान और अभिमान समाप्त करना है। शिवबाबा तो *करनकरावनहार* है और हम सब आत्मायें इस सृष्टि रंगमंच पर अपना-अपना पार्ट अदा कर रही हैं, यदि यह श्रेष्ठ स्मृति रहे तभी देहभान में नहीं आ सकती। मनमनाभव अर्थात् परमात्मा को याद करने से है, मध्याजी भव अर्थात् ब्रह्मा और

शंकर के मध्य विष्णु स्वरूप होने से है और मामेकम् अर्थात् केवल एक मुझे याद करने से है।जिससे भी देह अभिमान नहीं होता। परन्तु *करनकरावनहार* सबसे सुसंगत और सटीक विकल्प है।

उत्तर सं 5- "B" स्वर्ग के लक्ष्मी-नारायण ।

यह फिर है पुरूषोत्तम संगमयुग। यह संगम का भी एक त्योहार है। यह त्योहार सबसे ऊंच है। तुम जानते हो अभी हम पुरूषोत्तम बन रहे हैं। उत्तम ते उत्तम पुरूष। *ऊंच ते ऊंच साहूकार से साहूकार नम्बरवन कहेंगे लक्ष्मी-नारायण को।* सृष्टि भर में सबसे साहूकार कौन! सारी सृष्टि में सबसे साहूकार ते साहूकार स्वर्ग के लक्ष्मी नारायण हैं। ऐसा कौन आकर सुनाते हैं? बाप। बच्चे जानते हैं हमारे जैसा भविष्य 21 जन्मों के लिए सम्पत्तिवान कोई नहीं बनता।जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म था,बहुत साहूकार मालामाल था। शिव बाबा सृष्टि का रचता है वह हमें संगम पर ज्ञानयोग सुनाकर स्वर्ग का साहूकार बनाते हैं। संगमयुगी ब्राह्मण सबसे खुशनसीब हैं जो ज्ञान डांस करते हैं।

उत्तर सं 6- "B" गम्भीरता।

जगदम्बा की विशेषता - जमा का खाता। जो गम्भीरता के गुण ने फुल खाता जमा किया है। महावाक्य अनुसार- जिसमें * (गम्भीरता) फुल खाता जमा* किया है। कट नहीं हुआ है। अन्तर्मुखता भी मम्मा की प्रमुख विशेषता थी।समर्पणता व सेवा के गुण तो थे ही।पर वह सबसे बड़ा गुण गम्भीरता के कारण फुल खाता जमा किया।

उत्तर सं 7- "B" प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप।

जब फाइनल रिजल्ट होगी, उसमें पहली मार्क्स प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप को मिलेगी।जब रिज़ल्ट निकलेगी तो रिजल्ट में यह नहीं देखा जायेगा कि इसने ज्ञान का मनन अच्छा किया या सेवा में ज्ञान को अच्छा यूज़ किया। इस रिज़ल्ट के पहले स्वचिन्तन और परिवर्तन, स्वचिन्तन करने का अर्थ ही है परिवर्तन करना। तो जब फाइनल रिजल्ट होगी, उसमें पहली *मार्क्स प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप* को मिलेगी। जो धारणा स्वरूप होगा वो नेचुरल योगी तो होगा ही। अगर मार्क्स ज्यादा लेनी है तो पहले जो दूसरों को सुनाते हो, आजकल वैल्यूज़ पर जो भाषण करते हो, उसकी पहले स्वयं में चेकिंग करो क्योंकि सेवा की एक मार्क तो धारणा स्वरूप की 10 मार्क्स होती हैं, अगर आप ज्ञान

नहीं दे सकते हो लेकिन अपनी धारणा से प्रभाव डालते हो तो आपके सेवा की मार्क्स जमा हो गई।

उत्तर सं 8 - "B" *परमधाम (निर्वाणधाम)*

गति अथवा मुक्ति *निर्वाणधाम* में मिलती है।शान्ति मिलती है मुक्तिधाम में और सुख मिलता है जीवनमुक्ति में। तो मुक्ति और जीवनमुक्ति इन दोनों चीज़ों की प्राप्ति भगवान के सिवाए दूसरा कोई करा न सके।आपकी सद्गति के साथ-साथ सर्व आत्माओं को गति अर्थात् मुक्ति मिल जाती है। सब आत्मायें जहाँ रहती हैं वह है *निर्वाणधाम*, स्वीट होम। मुक्ति को तो सभी याद करते हैं, जहाँ हम बाप के साथ रहते हैं।